



साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

बुद्धवर्ष 2556,

ज्येष्ठ पूर्णिमा,

4 जून, 2012

वर्ष 41

अंक 12

वार्षिक शुल्क रु. 30/-

आजीवन शुल्क रु. 500/-

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

धम्मं चरे सुचरितं, न नं दुच्चरितं चरे।

धम्मचारी सुखं सेति, अस्मि लोके परम्हि च ॥

— धम्मपद १६९, लोकवग्गो

सुचरित धर्म का आचरण करे, दुराचरण से बचे।
धर्मचारी इस लोक और परलोक (दोनों जगह) सुखपूर्वक
विहार करता है।

उत्तराधिकारी कौन?

किसी पिता के एक या अधिक संतान हों तो वे सब उसके उत्तराधिकारी होते हैं। उसकी धन-दौलत, जायदाद के मालिक होते हैं। उसे बढ़ाते हैं या गँवाते हैं।

लेकिन धर्म के क्षेत्र में ऐसा कदापि नहीं होता। भगवान बुद्ध से जिन्होंने विपश्यना सीखी और उसे फैलाया, वे सब उनके उत्तराधिकारी बने। उन उत्तराधिकारी शिक्षकों ने औरों को विपश्यना सिखा कर, उसमें प्रवीण करके, उन्हें अपना उत्तराधिकारी बनाया। इस प्रकार पीढ़ी-दर-पीढ़ी गुरु-शिष्य परंपरा के आधार पर इन सभी उत्तराधिकारियों ने धर्म सिखाया। सम्राट अशोक के समय भिक्षु सोण और उत्तर हुए। वे भगवान का धर्म सीख कर उनके उत्तराधिकारी हुए और इसी रूप में धर्म सिखाने के लिए म्यंमा गये। वहां सामान्य लोगों को धर्म सिखाने के साथ-साथ उन्होंने कुछ ऐसे शिष्य तैयार किये जिन्होंने भगवान के उत्तराधिकारी के रूप में इस गुरु-शिष्य परंपरा को कायम रखा।

भगवान बुद्ध ने कभी अपने पुत्र राहुल को अपना उत्तराधिकारी नहीं बनाया। आगे जाकर गुरु नानकदेवजी ने अपने शिष्य अंगद देव को अपना उत्तराधिकारी बनाया, न कि अपने पुत्र को। धर्म के क्षेत्र में उत्तराधिकारी वही होता है जो अपने गुरु से धर्म सिखाने की विद्या प्राप्त करके उसे सिखाने लगता है। यह गुरु-शिष्य परंपरा पिछले ढाई हजार वर्षों से चलती आ रही है और आगे भी चलती रहेगी।

गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन से मैंने विपश्यना साधना, यानी, शुद्ध धर्म सीखा और उनकी उत्कट अभिलाषा को पूरी करते हुए भारत आकर लोगों को धर्म सिखाने लगा। रंगून रहते हुए १४ वर्षों तक मैं उनके संपर्क में रहा और देखा कि न जाने कितनी बार उन्होंने इन शब्दों का उच्चारण किया होगा, “भारत से हमें विपश्यना के रूप में अनमोल रत्न मिला। परंतु आज भारत इस रत्न को खोकर कंगाल हो गया है। इसे पुनः भारत ले जाकर हमें भारत का कर्ज चुकाना है। यह कर्ज और कौन चुका पायेगा भला! मैं ही चुकाऊंगा।” उन्हें ही भारत आकर अनमोल कर्ज चुकाना था।

वे स्वयं भारत आकर यहां विपश्यना का पुनर्जागरण करना चाहते थे, परंतु उन दिनों बर्मी नागरिकों को दो कारणों से ही पासपोर्ट दिया जाता था -- या तो वे बर्मा छोड़ कर सदा के लिए चले जायँ या उन्हें कहीं बाहर नौकरी मिल रही हो। सयाजी ऊ बा

खिन न तो सदा के लिए बर्मा छोड़ना चाहते थे और न ही भारत आने के लिए किसी झूठी नौकरी का सहारा लेना चाहते थे। अतः सरकार ने उन्हें पासपोर्ट नहीं दिया और वे भारत नहीं आ सके। परंतु एक अत्यंत विशिष्ट कारण से सौभाग्यवश मुझे बर्मा का पासपोर्ट मिला। मेरी माता बम्बई (मुंबई) में मानसिक रूप से अस्वस्थ हो गई थी और मैं जानता था कि यदि वह विपश्यना कर लेगी तो स्वस्थ हो जायगी। बर्मी केबिनेट में मेरे दो घनिष्ठ मित्र थे। उन्होंने मेरा पुरजोर समर्थन किया और इस विशेष कारण से मुझे पासपोर्ट मिल गया।

गुरुदेव इस घटना से बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा कि यद्यपि मैं स्वयं भारत का कर्जा नहीं चुका सकता, परंतु अब यह काम मेरी ओर से तुम्हें करना होगा। उनसे विपश्यना विद्या में पारंगत होकर मैं भारत आया और गुरुदेव के इस उद्देश्य की पूर्ति में लग गया। अतः धर्म के क्षेत्र में गुरु-शिष्य परंपरा के अनुसार मैं गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन का उत्तराधिकारी हुआ। मैंने भारत में अनेकों को विपश्यना की शिक्षा दी और कुछ को आचार्य पद पर स्थापित किया। जो आचार्यपद पर स्थापित हुए वे विपश्यना सिखाते हुए मेरे उत्तराधिकारी हुए। यों गुरुदेव के सपनों को साकार होते देख कर मेरे मन का बोझ हल्का हुआ। बर्मा पर भारत का जो कर्जा था, उसे चुकाने का काम आरंभ हुआ।

आगे जाकर विपश्यना के अनेक केंद्र बने और शनैः शनैः भारत में ही नहीं, बल्कि विश्व के अनेक देशों में केंद्र बनते गये। जहां-जहां ये केंद्र स्थापित हुए, वहां उन सभी केंद्रों में प्रशिक्षण देने वाले आचार्य मेरे उत्तराधिकारी ही हैं। क्योंकि मैंने उन्हें जो विपश्यना सिखायी, उसे वे फैलाने का ही काम कर रहे हैं।

जब दूर-दराज के अनेक स्थानों पर विपश्यना के अनेक केंद्र बन गये और बनते ही जा रहे हैं तब मैंने निश्चय किया कि प्रत्येक स्थानीय केंद्र पर प्रशिक्षक के रूप में एक-एक अलग-अलग उत्तराधिकारी हो, परंतु जहां कहीं आवश्यक हो, वहां उन्हें परामर्श देने के लिए अनेक प्रादेशिक आचार्य भी नियुक्त हों। जहां अनेक प्रादेशिक आचार्य काम कर रहे हों, वहां आवश्यक होने पर एक-एक बड़े क्षेत्र के लिए एक भौगोलिक आचार्य हो। केंद्रीय आचार्य, प्रादेशिक आचार्य तथा भौगोलिक आचार्यों की नियुक्ति होने पर वे सभी मेरे उत्तराधिकारी माने जायेंगे। इनके नाम मैं शीघ्र प्रकाशित करूंगा।

किसी केंद्र का अथवा प्रादेशिक या भौगोलिक क्षेत्र का उत्तराधिकारी हो जाने का अर्थ यह नहीं हुआ कि वह उस-उस

केंद्र या क्षेत्र का मालिक हो गया। सभी आचार्य मात्र प्रशिक्षण-क्षेत्र के उत्तराधिकारी हैं।

ऐसे ही केंद्र का संचालन करने वाले **ट्रस्टियों** का भी कोई उत्तराधिकार नहीं होता। किसी केंद्र में कोई मान-सम्मान या पद-प्रतिष्ठा पाने का अधिकार भी नहीं होता। वे सभी धर्मसेवक हैं और केंद्र की यथावश्यक सेवा करते हैं। जिस किसी व्यक्ति ने धर्मस्थल के लिए जमीन दान दी अथवा किसी ने उस पर कोई इमारत बनवा दी, तब दान दी गयी जमीन पर, अथवा उस पर बनायी गयी इमारत पर, उसकी कोई मल्लिक्यत नहीं हो सकती। मल्लिक्यत धर्म की होती है, दानी की नहीं। उनको अपने-अपने दान का और सेवा का अमूल्य पुण्यलाभ प्राप्त हो जाता है, बस इतना ही।

उदाहरण स्वरूप भगवान बुद्ध के समय अनाथपिंडिक ने सोने के सिक्के बिछा कर भगवान को भूमि का दान दिया। उस भूमि पर बहुत-सा धन लगा कर आवासीय आवश्यकताओं की भी पूर्ति की। इतना होने पर भी अनाथपिंडिक धर्म की परंपरा को खूब समझता था कि दान दी गयी भूमि और उस पर बनाई गयी इमारतों पर उसका रंचमात्र भी अधिकार नहीं है। जो दान दे दिया सो दे दिया। बदले में कुछ प्राप्त करने की भावना अत्यंत दोषपूर्ण है। यद्यपि उसने देखा कि वर्षावास के बाद जब भगवान अपने भिक्षुओं के साथ अन्य प्रदेशों में विहार करने चले जाते हैं तब यह विहार बिल्कुल सूना पड़ जाता है। भगवान के प्रवास के समय यहां जो भीड़ लगती, वह अब नहीं आती। उसकी बहुत इच्छा थी कि भगवान की अनुपस्थिति में भी लोगों की भीड़ सतत बनी रहे। इस निमित्त उस भूमि पर वह भगवान का एक मंदिर जैसा स्थान बनाना चाहता था। परंतु बहुत चाहते हुए भी ऐसा नहीं कर सका। क्योंकि जो भूमि दान दे दी, उस पर उसका कोई अधिकार नहीं था। अतः अपनी इच्छा पूरी करने के लिए वह भगवान से प्रार्थना करने गया कि उसे वहां एक मंदिर बनवाने की अनुमति दें। यदि दान दी गयी भूमि पर उसकी मल्लिक्यत होती तो उसे भगवान से अनुमति लेने की क्या आवश्यकता थी? भगवान ने अनुमति नहीं दी। क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि धर्म का स्थान पूजन-अर्चन और भीड़-भाड़ आदि के लिए हो। वह तो ध्यान के लिए होता है। अतः भगवान ने बोधिवृक्ष की शाखा मँगवा कर वहां लगवायी और कहा, 'इसके बड़ जाने पर लोग इसके नीचे बैठ कर ध्यान करेंगे। इस प्रकार इस धरती का लोगों को सही लाभ मिलेगा।'

इसी प्रकार आज भी जमीन का, या उस पर केंद्र बनाने का, दान देने वाले व्यक्ति इस पुरातन परंपरा को खूब समझते रहें कि दिये हुए दान पर उनका रंचमात्र भी अधिकार नहीं हो सकता। धर्म की यह शुद्ध परंपरा कायम रहेगी तभी धर्म की सही अभिवृद्धि होती रहेगी। यहां सदैव पीढ़ी-दर-पीढ़ी धर्म का ही प्रशिक्षण दिया जाता रहेगा। केंद्र के आचार्य समय-समय पर बदलते रहेंगे, परंतु धर्म प्रशिक्षण का कार्य सतत चलता रहेगा।

विपश्यना के अनेक केंद्रों की स्थापना हो जाने पर मेरे मन में कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण विचार उठे, जिनका विपश्यना के प्रशिक्षण से कोई संबंध नहीं था। एक महत्त्वपूर्ण विचार तो यह आया कि भगवान बुद्ध की पावन शिक्षा भारत से कैसे पूर्णतया लुप्त हुई? इसका अनुसंधान हो और भारत तथा विश्व में अब पुनः जाग्रत हुई इस विद्या की समग्र प्रशिक्षण सामग्री सदियों तक सुरक्षित रहे। साथ ही भगवान की शिक्षा का प्रमुख साहित्य 'तिपिटक' यानी, इसका परियत्ति-पक्ष (Theoretical aspect) जो भारत से लुप्त हो चुका था, वह भी पुनः प्रकाशित हो। इसके लिए 'विपश्यना

विशोधन विन्यास' के नाम से एक शोध संस्थान गठित हो। आने वाले युगों में बुद्ध की शिक्षा के पुनर्जागरण से संबंधित सारा साहित्य इसके पास सुरक्षित ही नहीं रहे, बल्कि आज और आगे भी सदियों तक इसका उपयोग और अनुसंधान भी होता रहे। इस विशोधन के लिए शोध करने वाले भिन्न-भिन्न मर्मज्ञ समय-समय पर सेवा में लगते रहेंगे। यानी, इस विशोधन-कार्य में गुरु-शिष्य परंपरा बिल्कुल नहीं रहेगी। इसीलिए जब इसका ट्रस्ट-डीड बने तब इस विशोधन संस्था के लिए मेरे द्वारा एक योग्य उत्तराधिकारी बनाने का प्रावधान रखा जाय।

मेरे मन में दूसरा विचार यह उठा कि भगवान बुद्ध की पावन धातुओं का सही सम्मान तभी होगा जब कि वे भगवान के मार्गदर्शन के अनुसार किसी भव्य स्तूप में सन्निधानित की जायेंगी। यह भव्य स्तूप भी ब्रह्मदेश की स्थापत्यकला के आधार पर ही बने। यह इसलिए कि ब्रह्मदेश ने सम्राट अशोक से प्राप्त हुई परियत्ति, यानी, बुद्ध-वाणी और पटिपत्ति, यानी, विपश्यना को गुरु-शिष्य परंपरा से पीढ़ी-दर-पीढ़ी दो हजार वर्षों तक शुद्ध रूप में कायम रखा। तभी ये दोनों हमें प्राप्त हुईं। जैसे बर्मा के लोगों ने भारत का उपकार माना, क्योंकि यहीं से उन्हें शुद्ध धर्म प्राप्त हुआ; साथ-साथ सम्राट अशोक का भी उपकार माना, जिसके प्रयास से उन्हें धर्म प्राप्त हुआ। इसी प्रकार आज भारत के लोग भी **बर्मा** का उपकार मानें, और साथ-साथ **सयाजी ऊ बा खिन** का भी उपकार मानें, जिन्होंने कि बर्मा का कर्ज चुकाने के लिए मुझे पूरी तरह से प्रशिक्षित करके भारत भेजा। इन दोनों के उपकारों की पावन स्मृतियां दीर्घकाल तक बनी रहें, इस निमित्त मेरे मन में एक भव्य स्तूप - **विश्व विपश्यना पगोडा** के निर्माण की योजना जागी। यह विश्वभर के बुद्धानुयायियों, विशेष करके विपश्यी साधकों को आह्वान करने के लिए एक आकर्षक प्रकाश स्तंभ होगा। इसके लिए '**ग्लोबल विपश्यना फाउंडेशन**' का गठन किया जायगा और यह ध्यान रखा जायगा कि इस पगोडा की बनावट बर्मी स्थापत्य एवं वास्तुकला के अनुसार हो ताकि आज ही नहीं, भविष्य में भी लोगों को बर्मा तथा सयाजी ऊ बा खिन के उपकारों की याद आती रहे।

मेरी इस कल्पना के अनुसार पगोडा का निर्माण हुआ जिसमें भारत तथा पड़ोसी देशों के विपश्यी साधकों तथा अन्यान्य बुद्धभक्तों ने श्रद्धापूर्वक दान दिया। किसी ने भी यह सोच कर दान नहीं दिया कि मैं पगोडा का ट्रस्टी बन जाऊंगा अथवा इसका अध्यक्ष बन जाऊंगा अथवा गुरुजी के न रहने पर मालिक बन जाऊंगा। इन दानियों में मुझे एक सर्वश्रेष्ठ दान की याद आती रहती है जिसने मेरी आंखों को सजल बनाया। पगोडा के उद्घाटन समारोह में इसके मुख्य कक्ष (डोम) में दान के लिए एक छोटा-सा कलश रखा गया था। मैंने देखा कि सिर पर उठाकर घर-घर साग-सब्जी बेच कर गुजारा करने वाली डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की अनुयायिनी एक महिला ने जब देखा कि भगवान बुद्ध के नाम पर इतना विशाल पगोडा बन रहा है, तब उसने अपनी साड़ी के पल्ले से खोल कर कुछ सिक्के निकाल कर श्रद्धापूर्वक दान-पात्र में डाले, जिनकी खनकती आवाज ने मुझे भावविभोर बना दिया। उस गरीब महिला का दान कितना सात्त्विक और मूल्यवान था! करोड़ों का दान देने वालों के सामने अधिक सुफलदायी था। वह कुछ ऐसे दान देने वालों की भांति कैसे सोचती कि मैं कभी इस पगोडा की ट्रस्टी या अध्यक्ष बन जाऊंगा या आगे जाकर इसकी मालकिन बन जाऊंगा? बिना कुछ पाने की भावना के साथ दिया गया उस गरीब महिला का यह शुद्ध दान सचमुच इतिहास में याद रखने योग्य होगा। बिना बदले में कुछ पाने की भावना से दिया गया दान ही दान है, नहीं तो व्यवसाय है।

इस पगोडा के परिसर में भगवान बुद्ध के जीवनकाल की एक चित्र-प्रदर्शनी बनी, जिसे बनाने में बर्मा के प्रमुख कलाकार बुलाये गये। ऐसा हो जाने पर इस चित्रकला, वास्तुकला तथा पगोडा की भव्य विशेषता को कायम रखने के लिए जो ट्रस्ट-डीड बना उसमें मेरे द्वारा उत्तराधिकारी नियुक्त करने का प्रावधान रखा। इस उत्तराधिकार का एक व्यक्ति विशेषरूप से बर्मी कला तथा पगोडा की बर्मी स्थापत्यकला की देखभाल के लिए जिम्मेदार होगा और दूसरे चार विपश्यना के आचार्य होंगे जो कि विशाल ध्यानकक्ष तथा पगोडा-परिसर में कहीं कोई धर्मविरुद्ध कार्य न हो जाय, इसकी देखभाल करेंगे। अतः इस ट्रस्ट में एक की जगह पांच उत्तराधिकारी नियुक्त करके मैंने ट्रस्ट के मूल प्रावधान को आवश्यकतानुसार निभाया।

तीसरी आवश्यकता यह महसूस हुई कि इस पगोडा के रख-रखाव, अन्यान्य स्मृति-चिह्न और बर्मी वास्तुकला की मरम्मत आदि के लिए आवश्यक धन की पूर्ति हेतु 'सम्यक वाणिज्य चैरिटेबल ट्रस्ट' का गठन किया जाय। यहां भी गुरु-शिष्य परंपरा का कोई नियम नहीं होने के कारण मेरे द्वारा एक उत्तराधिकारी नियुक्त करने का प्रावधान रखा गया। यानी, विपश्यना के प्रशिक्षण केंद्रों से अलग केवल इन तीन उपरोक्त प्रतिष्ठानों में ही मेरे द्वारा उत्तराधिकारी नियुक्त करने का प्रावधान है।

ये तीनों संस्थाएं मेरे अपने स्वप्नों की उपज हैं। इन तीनों संस्थानों का गठन भिन्न-भिन्न उद्देश्यों से हुआ है। इन तीनों संस्थाओं को मेरे बाद भी चिर-काल तक स्थायी रखना आवश्यक मानता हूं। इसीलिए इन तीनों में उत्तराधिकारी नियुक्त करने का प्रावधान रखा गया है। अतः इनमें अब जो उत्तराधिकारी नियुक्त किये जायेंगे, वे अपने बाद अन्य योग्य व्यक्तियों को अपनी-अपनी जिम्मेदारी के कार्यों को करते रहने के लिए नियुक्त करेंगे; ताकि ये तीनों कार्य पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुचारुरूप से चलते रहें।

जहां तक गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन द्वारा भारत का कर्ज चुकाने का प्रश्न था, उसके लिए विपश्यना केंद्रों का गठन इसी प्रकार से हुआ, जिनमें पुरातन काल से चली आ रही गुरु-शिष्य परंपरा को ही आधार बनाया गया है। क्योंकि जो लोगों को धर्म सिखाता है और उनमें धर्म जगाता है वही विपश्यना के प्रशिक्षण केंद्र का उत्तराधिकारी होता है। यहां जो भी आचार्य आज सुनिश्चित हैं या भविष्य में होंगे, वे सब उत्तराधिकारी का ही कार्य करेंगे। इसी कारण इन विपश्यना केंद्रों के गठन में किसी प्रशिक्षित आचार्य को छोड़ कर अन्य किसी को उत्तराधिकारी नहीं बनाया जा सकता। क्योंकि जितने भी विपश्यना केंद्र हैं उनके लिए तो प्रशिक्षक आचार्य उत्तराधिकारी होंगे ही, उनके बाद भी जो-जो आचार्य होंगे, वे सब गुरु-शिष्य परंपरा के आधार पर उत्तराधिकारी ही होंगे। इसी कारण इनके ट्रस्ट-डीडों में मेरे द्वारा किसी उत्तराधिकारी की नियुक्ति का वर्णन आवश्यक नहीं समझा गया। परंतु उपरोक्त तीन संस्थान जो कि विपश्यना के प्रशिक्षण के लिए नहीं हैं, उनमें मेरे द्वारा विशेष रूप से उत्तराधिकारी नियुक्त करने का प्रावधान अवश्य रखा गया।

यह बात फिर दुहरा दूं और सब को खूब समझ लेनी चाहिए कि धर्म के क्षेत्र पर किसी की मल्लिक्यत नहीं होती -- न उत्तराधिकारियों की, न ट्रस्टियों की, न दान-दाताओं की, न शासनाधिकारियों की। सबको मात्र अपने-अपने जिम्मे का काम करने का अधिकार है। धर्म का सारा कार्य बहुत शांतिपूर्वक चलना चाहिए। किसी के मन में कोई मिथ्या संदेह हो अथवा भ्रांति

हो तो मुझसे मिल कर उसे दूर कर ले। मंगल भावनाओं के साथ धर्म का कार्य चलता रहे, इसी में सबका कल्याण है।

कल्याणमित्र, सत्यनारायण गोयन्का

मंगल मृत्यु

२८ अप्रिल को पांच बजे सुबह जब स्टीव ने शान्तिपूर्वक तथा पूरी जागरूकता के साथ शरीर छोड़ा तो इसके कुछ घंटे पहले आप दोनों की मेत्ता पाकर वह बड़ा प्रसन्न हुआ। मेत्ता के लिए धन्यवाद! उसका फेफड़े का कैंसर बड़ी तेजी से फैला था और मृत्यु के पहले एक सप्ताह तक उसे पैलियेटिव केयर अस्पताल में रखा गया। सोमवार को उसे सांस लेने में बड़ी कठिनाई हो रही थी और वह बोल नहीं पा रहा था, परंतु पूरे होशो हवाश में था और इशारों से बात कर सकता था। पूरी रात मैं उसके साथ ध्यान करती रही और जब अन्तिम घड़ी आयी तब उसके चेहरे पर न चिंता थी और न तनाव था। सांस धीरे-धीरे आ-जा रही थी और फिर एकाएक बंद हो गयी।

— (क्रिस्टीन स्मिथ, आस्ट्रेलिया)

विपश्यना ग्लोबल पगोडा पर धर्मसेवा

ग्लोबल विपश्यना पगोडा में भगवान बुद्ध के पावन शरीरधातु के सान्निध्य में सेवा देने का अमूल्य अवसर है। स्वेच्छापूर्वक धर्मसेवा के लिए उत्सुक साधक-साधिकाओं से आवेदन-पत्र आमंत्रित किये जा रहे हैं। मुंबई के वे साधक ही आवेदन करें जो पगोडा में दिन भर सूचना-सेवा-सदस्य के रूप में सेवा देकर घर वापस लौट सकते हैं। योग्यता-- सुशिक्षित पुराने विपश्यी साधक जो नपी-तुली भाषा में परिसर में आये हुए पर्यटकों को जानकारी दे सकें, शांत स्वभाव तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाले हों। यात्रा-खर्च के साथ भोजन का भी प्रबंध किया जायगा। साथ ही उन्हें पगोडा में ध्यान करने का सुअवसर मिलेगा। विपश्यना के प्रसार में योगदान करने का यह बहुत ही दुर्लभ और ऐतिहासिक अवसर है।

संपर्क: guides@globalpagoda.org; श्री सारंग नांदेडकर, ०२२-३३७७७०१/६.

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

- श्री अमल घोष, ठाणे
- श्री भारत प्रसाद मिश्रा, मुजफ्फरपुर
- श्री अनिलकुमार मोर्य, भदोही
- श्री एस. गणेशन, तिरुनिरावूर
- श्रीमती वीणा ठाकर, गांधीनगर
- श्रीमती पुष्पा झा, अहमदाबाद
- Mr. Vitharanage Karunasena, Sri Lanka
- Mr. Yves Paillard, France
- Mrs. Thaveephol Anusingh, Thailand
- Mrs. Sirivan Chulakorn, Thailand
- Mrs. Farideh Sharifi, Iran
- Ms. Fatima Coelho, Brazil
- Mr. Denekew Tekle, Canada

बालशिविर शिक्षक

- श्रीमती कविता गायकवाड, पुणे
- श्री प्रवीण वाबले, गोंदिया
- श्री विनीत शर्मा, गाजियाबाद
- श्रीमती मधु प्रीत, पांचकुला
- श्रीमती अनोता गर्ग, पांचकुला
- श्रीमती वंदना त्रिपाठी, पांचकुला
- श्रीमती जयश्री सोमकुवर, भोपाल
- श्रीमती लोरी चतुर्वेदी, म्हाऊ
- श्री रमेश लतरे, बालाघाट
- कु. कविता अहिंमारे, बालाघाट
- श्री बेशाज कुमार साहू, छत्तीसगढ़
- श्री बी. एल. बौद्ध, छत्तीसगढ़

- श्रीमती भानू प्रकाश चेरापल्ली, नालगोंडा
- श्री के. वेंकटाचरण कुमार, सिकंदराबाद
- श्रीमती कृष्णकुमारी एम., निजामाबाद
- श्रीमती सुजाथा सुधाकर, हैदराबाद
- श्रीमती वीना भंडारी, सिकंदराबाद
- श्रीमती जी. लीला, वारंगल
- श्री अश्विन जनगाम, बेंगलुरु
- श्रीमती रेखा सुरेश, बेंगलुरु
- श्री ललित अग्रवाल, बेंगलुरु
- श्री सत्यनारायण, बेंगलुरु
- श्री आनंद मुले, बेंगलुरु
- डॉ. अद्वैत कुलकर्णी, बेंगलुरु
- श्रीमती आरती रॉय, बेंगलुरु
- श्री पवनकुमार एवं श्रीमती प्रेरणा प. मृत्युंजय, बेंगलुरु
- श्री मधु नाग, बेंगलोर (बेंगलुरु)
- श्री राजकुमार मेश्राम, कल्पक्कम
- श्री प्रवीर पाल, कल्पक्कम
- श्रीमती एस. पद्माप्रिया, अनुपुरम
- श्रीमती ज्योत्सना चकमी, मिजोरम
- श्री सुभाशीष चकमा, मिजोरम
- श्री उमाचरण चकमा, मिजोरम
- श्री सूर्यो कुमार चकमा, मिजोरम
- श्री भाबन्तु मुकुल चकमा, मिजोरम
- श्री रेक्सिनोवा पुण्या चकमा, मिजोरम
- Veronica Coussieu, France

विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपुरी और दर्शन विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय
के संयुक्त सहयोग से

बुद्ध की शिक्षा (विपश्यना यानी परियत्ति और पटिपत्ति) में एक-वर्षीय डिप्लोमा कोर्स (वर्ष २०१२-२०१३)

पाठ्यक्रम - इसमें परियत्ति तथा पटिपत्ति दोनों हैं - पालिभाषा तथा पालिसाहित्य में प्रवेश, तिपिटक से चुने गये सुत्त, भगवान बुद्ध का जीवन और उनकी शिक्षा। विपश्यना साधना के सिद्धांत और विधि, स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक विकास आदि के क्षेत्रों में विपश्यना का व्यावहारिक उपयोग तथा और भी बहुत से अन्य विषय।

स्थान - दर्शन विभाग, ज्ञानेश्वर भवन, मुंबई विश्वविद्यालय, विद्यानगरी कैम्पस, कालीना, सांताक्रुज (पूर्व), मुंबई - ४०००९८.

समय - प्रत्येक शनिवार को २ बजे से ६ बजे शाम तक

कोर्स की अवधि - २१ जुलाई २०१२ से ३१ मार्च २०१३

आवेदन पत्र - दर्शन विभाग में (सोमवार से शुक्रवार, ११:३० से २:३० बजे तक) २ जुलाई से १७ जुलाई २०१२ तक लिये जा सकते हैं।

योग्यता - पुराने एस.एस.सी. और नये एच.एस.सी. (१२ वीं कक्षा उत्तीर्ण)

आवश्यकता - दीपावली की छुट्टी में एक दस-दिवसीय विपश्यना शिविर करना आवश्यक है तभी परीक्षा में बैठने की अनुमति दी जायगी।

शिक्षण का माध्यम - अंग्रेजी।

संपर्क: १) श्रीमती शारदा संघवी - फोन: (०२२-२३०९५४१३) ०९२२३४६२८०५, २) श्रीमती बलजीत लाम्बा - फोन: (०२२) २६२३७१५०, ०९८३३५१८९७९ ३) अलका वेंगुलकर मोबाईल - ०९८२०५६३४४०

एक घंटे के लघु आनापान शिविर

पूज्य गुरुदेव ने लाखों लोगों के हित-सुख को ध्यान में रखते हुए सब के लिए एक घंटे का लघु आनापान शिविर लगाने की छूट दी है। ग्लोबल पगोडा में प्रतिदिन प्रातः ११ से १२ बजे तथा सायं ४ से ५ बजे, इन शिविरों का आयोजन आरंभ हो चुका है। १० वर्ष से अधिक आयु के सभी लोग इनमें भाग ले सकते हैं। पूरे घंटे भर हॉल में बैठना अनिवार्य है।

सहायक आचार्य कार्यशाला

धम्मगिरि पर २४ से २८ अक्टूबर तक। अपनी बुकिंग करा कर अधिक-से-अधिक सहायक आचार्य इस कार्यशाला का लाभ ले सकते हैं।

धम्मचक्र पवत्तन पूर्णिमा के उपलक्ष्य में पूज्य गुरुदेव के सांख्यिक में एक दिवसीय महाशिविर

८ जुलाई, २०१२, रविवार, समय: प्रातः ११ बजे से अपराह्न ४ बजे तक, 'ग्लोबल विपश्यना पगोडा' के बड़े धम्मकक्ष (डोम) में। कृपया ध्यान दें कि इस विशाल शिविर में आपको किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसलिए बिना बुकिंग कराये न आएंगे। बुकिंग संपर्क : मो. 09892855692, 09892855945, फोन नं.: 022-28451170, 33747543, 33747544, (फोन बुकिंग : प्रातः ११ से सायं ५ तक, प्रतिदिन)

ईमेल Registration: oneday@globalpagoda.org

Online Registration: www.vridhamma.org

दोहे धर्म के

पंचशील पालन करें, दान देंय दिल खोल।
करें साधना भावना, यही धर्म अनमोल॥
पुण्य कर्म संचित करें, करें न पाप लव लेश।
मन निर्मल करते रहें, यही धर्म संदेश॥
माता-पिता की वन्दना, गुरुजन का सत्कार।
समता होवे मित्र से, पत्नी से हो प्यार।
परिजन का पालन करे, करे दान उन्मुक्त।
सदा मुक्त ऋण से रहे, पावे सुख उपयुक्त॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड

८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018

फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166

Email: arun@chemito.net

की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

मन पल पल प्रमुदित हुवै, दान दियां पर हेत।
ई प्रमोद रै बीज स्यूं, सुख निपजै अणमेत॥
समझ धरम रै मरम नै, देवै सो ही दान।
दान दियां मन भ्रिदु हुवै, भ्रिदु मन सुख री खाण॥
सौरै मन स्यूं दान दे, सौरै मन सुख होय।
दोरो मन करतां तुरत, सुख अपणो दे खोय॥
दान दियां अर बावळो, डूंडी रह्यो पिटाय।
दान दियां जस आप ही, बिना बुलायो आय॥

एक साधक

की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422 403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.

मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422 007.

बुद्धवर्ष 2556,

ज्येष्ठ पूर्णिमा,

4 जून, 2012

वार्षिक शुल्क रु. 30/-, US \$ 10, आजीवन शुल्क रु. 500/-, US \$ 100. 'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/235/2012-2014

WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014

Posting day- Purnima of Every Month, Posted at Iगतपुरी-422 403, Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास

धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403

जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत

फोन : (02553) 244076, 244086, 243712,

243238. फैक्स : (02553) 244176

Email: info@giri.dhamma.org

Website: www.vridhamma.org